UGC Care Listed
त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504 Nagfani
RNI No. UTTHIN/2010/34408
वर्ष-12, अंक-41, अपैल - जून 2022

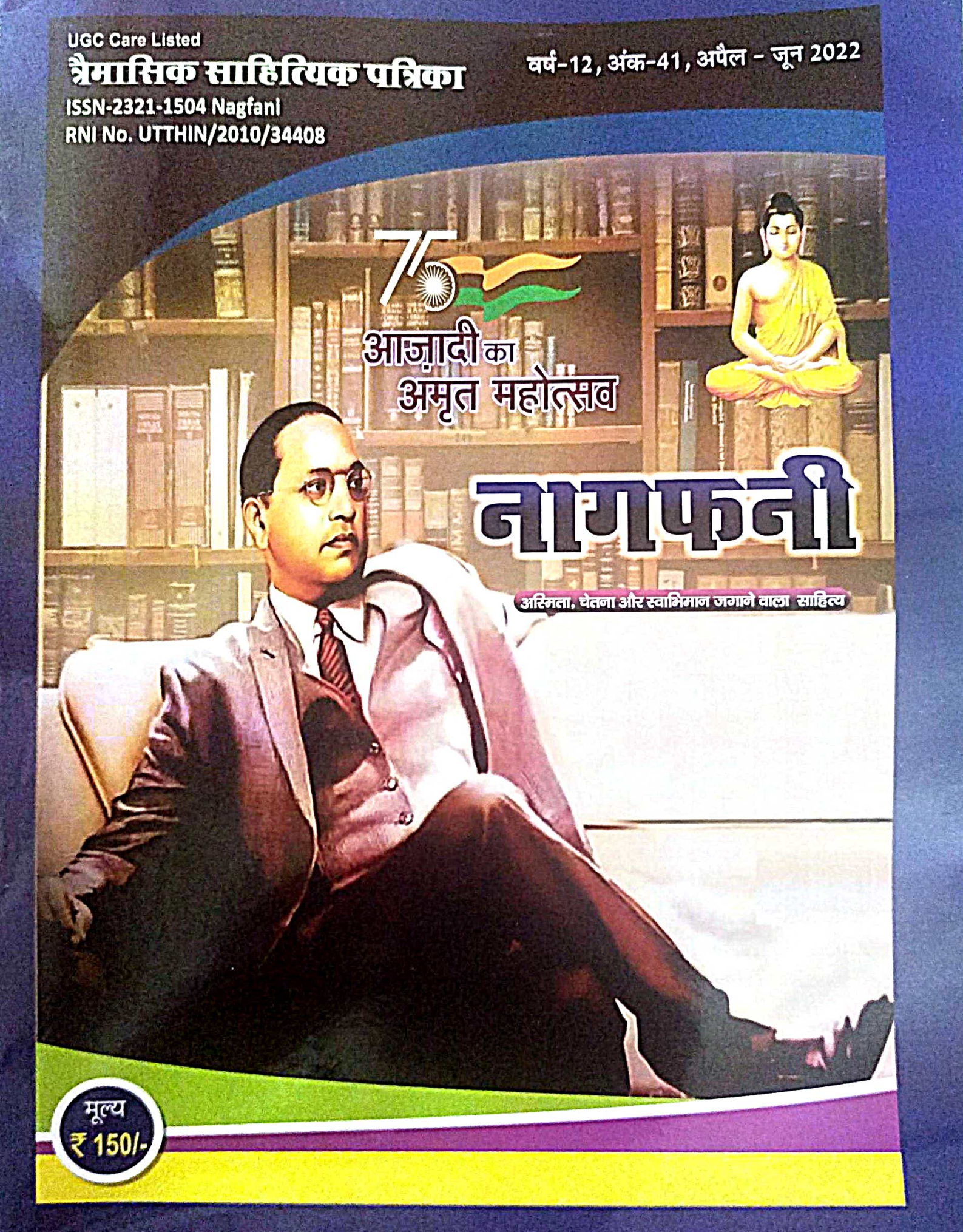

नागफनी

अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

मूल्य
₹ 150/-

अधिक जानकारी के लिए वेबसाइट देखिए http%//naagfani.com

रोमी प्रेस बैतूल / 9425178103

नागफनी

A Peer Reviewed Refrred Journal
(अस्मिता चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य)
UGC Care Listed त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504NagfaniRNI No.UTTHIN/2010/34408

संपादक
सपना सोनकर

सह संपादक
रूपनारायण सोनकर

कार्यकारी संपादक
डॉ.एन.पी.प्रजापति
प्रोफेसर बलिराम धापसे

वर्ष-12 अंक41,अप्रैल -जून 2022

सलाहकार मण्डल (Peer Review Comittee)

प्रोफेसर विष्णु सरवदे, हैदराबाद (तेलंगाना)
प्रोफेसर आर. जयचंद्रन तिरुअनंतपुरम (केरल)
प्रोफेसर दिनेश कुशवाह,रीवा (मध्य प्रदेश)
डॉ.एन. एस. परमार, बड़ौदा (गुजरात)
प्रो. दिलीप कुमार मेहरा, बी.बी.नगर (गुजरात)
डॉ.उमाकांत हजारिका, शिवसागर(असम)
डॉ. आर. कनागसेल्वम, इरोड (तमिलनाडु)
प्रोफेसर संजय एल. मादार,धारवाड़ (कर्नाटक)
प्रोफेसर गोविन्द बुरसे, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ.दादा साहेब सालुनके, महाराष्ट्र (औरंगाबाद)
प्रोफेसर अलका गड़करी, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. साहिरा बानो बी. बोरगल, हैदराबाद (तेलंगाना)
डॉ. बलविंदर कौर, हैदराबाद (तेलंगाना)
डॉ.ओम प्रकाश सैनी, कैथल (हरियाणा)

प्रकाशन/मुद्रण

प्रकाशक रूपनारायण सोनकर की अनुमति से डॉ.एन. पी.प्रजापति एवं प्रोफेसर बलिराम धापसे द्वारा नमन प्रकाशन–423/Aअंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली 11002 में प्रकाशन एवं मुद्रण कार्य

मुख पृष्ठ—डॉ. आजम शेख, मैत्री ग्राफिक्स, सावंगी (ह), औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

संपादकीय/व्यवस्थापकीय कार्यालय

दून व्यू कॉटेज स्प्रिंग रोड, मंसूरी -248179, उत्तराखण्ड, दूरभाष : 0135-6457809 मो.0941077718

शाखा कार्यालय

पी.डब्ल्यू. डी. आर. -62 ए ब्लॉक कॉलोनी बैढ़न, जिला-सिंगरौली म. प्र. पिन-486886 मो. 09752998467

सहयोग राशि -150/-रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्क (संस्था के लिए)-1000/-रुपये, पंच वार्षिक सदस्यता शुल्क (व्यक्ति के लिए)-2000/-रुपये, पंच वार्षिक संस्था और पुस्तकालयों के लिए –3000/-रुपये, विदेशों में$50 आजीवन व्यक्ति-6000/-रुपये,संस्था-10,000/-रुपये।

सदस्यता शुल्क एवं सहयोग राशि-इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक–A/C –8367100138282 IFSC Code-IPOS0000001
Branch-sidhi, NIRPAT PRASAD PRAJAPATI

नोट:-पत्रिका की किसी भी सामग्री का उपयोग करने से पहले संपादक की अनुमति आवश्यक है। संपादक-संचालक पूर्णतया अवैतनिक एवं अध्यवसायी हैं।'नागफनी'में प्रकाशित शोध-पत्र एवं लेख, लेखकों के विचार उनके स्वयं के हैं। जिनमेंसंपादक की सहमति अनिवार्य नहीं हैं 'नागफनी' से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। सारे भुगतान मनीऑर्डर, बैंक/चेक/बैंक ट्रांसफर/ई-पेमेंट आदि से किए जा सकते हैं। देहरादून से बाहर के चेक में बैंक कमीशन 50/-अतिरिक्त जोड़ें दें।

लेख भेजने के लिए –Mail-ID- nagfani81@gamil.com
पत्रिका के बारे मे विस्तार से जानने के लिए देखें Website:- http:naagfani.com

नागफनी

वर्ष-12 अंक 41,अप्रैल-जून-2022 भाग-2

भाग-2

अनुक्रम पृष्ठ क्रमांक

संपादकीय 04

साहित्यिक विमर्श

1. लोक-साहित्य एवं इसके विविध रूप-**डॉ.निधि शर्मा** 5-7
2. वर्तमान संदर्भ में कबीर के काव्य में सामाजिक दर्शन:एक अध्ययन -**डॉ.मो.मजीद मियाँ** 7-8
3. आधुनिक हिन्दी कविता का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान-**डॉ.पवन कुमार शर्मा & डॉ.सुनील** 9-10
4. डूब: मनुष्यता और विकास के उन्माद की लड़ाई-**अपर्णा ए.** 10-12
5. सामाजिक दर्दशा का यथार्थ दस्तावेज : गिलिगडु-**डॉ.संतोष बबन पगार** 12-14
6. राजनीति संस्था और शरद जोशी एवं उनके समकालीन व्यंग्यकार-**राजेश कुमार शर्मा & डॉ. राज नारायण शुक्ल** 15-17
7. हिंदी सिनेमा में कमलेश्वर का अवदान-**डॉ.श्रीमती विनोद कालरा** 18-20
8. प्रेम की वेदी : एक अनुशीलन-**मिन्नु जोसेफ** 21-22
9. ग्राम्य जीवन के विभिन्न पक्ष-**पवन कुमारी** 23-25
10. बदलते हुए राजनीतिक परिदृश्य : 'एक हत्या की हत्या' नाटक के संदर्भ में-**चिप्पी एम.आर.** 26-28
11. हिन्दी पत्रकारिता के बदलते स्वरूप-**कनक राज पाठक** 28-30
12. महीप सिंह की कहानियों में मानवीय सम्बंध-**डॉ.प्रवीन कुमार** 30-31
13. मणिपुरी बाल साहित्य: उद्भव और विकास- **एस. साधना चनु** 32-34

स्त्री विमर्श

1. हिंदी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में नारीवादी विचार-**डॉ.पंडित बन्ने** 35-36
2. सेज पर संस्कृत उपन्यास में चित्रित-स्त्री-**डॉ.आशीष** 36-38
3. दासताएँ औरत (वीना वर्मा की नज़र से)-**डॉ.चमकौर सिंह** 38-40
4. जुलूस उपन्यास के स्त्री पात्र-**डॉ.माया सगरे लक्का** 41-43
5. विस्थापन का दर्द : कश्मीरी लेखिकाओं की संघर्ष गाथा-**ममता माली & डॉ. जयश्री सिंह** 44-46
6. 'कठगुलाब':एब्यूज्ड स्त्री चिंतन से आगे की कथा- **डॉ.वीरेन्द्र प्रताप** 46-49

दलित विमर्श

1. गुरु रैदास का पाठ–संपादन-**डॉ.राजेंद्र प्रसाद सिंह** 50-51
2. श्यौराज सिंह बेचैन की कहानियों में संवेदना के विविध रूप :'हाथ तो उग ही आते हैं ' कहानी संग्रह के विशेष संदर्भ में-**शमीम पी** 52-53
3. दलित जीवन की भयानक त्रासदी : 'सद्गति'-**डॉ.पान सिंह** 54-56
4. जयप्रकाश कर्दम के उपन्यास 'छप्पर' में सामाजिक चेतना-**अजय कुमार चौधरी** 57-59
5. ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में 'दलित आत्म-संघर्ष'-**मु.जाहिद रजा सिद्दीक** 59-62

आदिवासी विमर्श

1. रोज केरकेट्टा के 'अबसिब मुरडअ' में आदिवासी प्रतिरोध-**कु. रेशम सोनकर** 63-65

विविध विमर्श

1. भारतीय बौद्ध दर्शन का कालजयी विश्वकाव्य : धम्मपद-**प्रो.डॉ.शशिकांत 'सावन'** 66-69
2. अटल बिहारी वाजपेयी का जीवन दर्शन-**कैलाश कुमार & डॉ शंकर मुनि राय** 70-72
3. कांग्रेस पार्टी और भारतीय राजीनीति:एक सूक्ष्म विश्लेषण-**पूरन मल मीना** 72-74
4. जनसंख्या भूगोल-भविष्य का भूगोल-**वरुण यादव & डॉ.सालिक सिंह** 75-76
5. भारत में कृषि आय पर कर: संभावनाऐ और चुनौतियों का मूल्यांकन-**मुकेश कुमार मीना & विनोद सेन** 77-79

English Discourse

Canonical Literary Discourse

1. A Brief Analysis of Diversity in Indian Culture and Traditions in Jayanta Mahapatra's Poetry Collection, 'A Rain of Rites'-**Manabodh Luhura &Dr. Ranjana Das Sarkhel** 80-82
2. Past Haunts Present: A Study of Mahesh Dattani's Where Did I Leave my Purdah?-**Dr. Santosh Kumar Sonker & Dr. B. Krishnaiah** 83-85
3. The Male Identity Crisis in Sarnath Banerjee's Graphic Novel Corridor: A Deconstructive Study-**Sonia Sumbria & Dr.Meenakshi Rana** 86-89
4. Refelections of Cuisine and Costumes in Naveen Patnaik 'A Second Paradise'- **Rajkumar Baghel &Dr.Ranjana Das Sarkhel** 90-93

आगामी भविष्य तक प्रसृत है। केवल इतना ही नहीं उपर्युक्त काव्य पंक्तियों से यह भी देदीप्यमान है कि कविता की दृष्टि सिर्फ मानव केंद्रित नहीं बल्कि गहन पर्यावरणीय संवेदना के वाहक भी है। इसलिए ही कविता मानवाधिकार की वकालत करने के साथ ही मानवेतर तत्वों की जैविकता, नैसर्गिकता और अधिकार की माँग बुलंद करती है। इसके द्वारा वह अपने पाठक को जाने-अनजाने यह सबक देती है कि यह पृथ्वी केवल मनुष्य की नहीं है। इस प्रकार कविता यह द्योतित करती है कि वर्तमान की पूँजीवादी विकास दृष्टि मनुष्य केंद्रित है जो मानवेतर जैविक-अजैविक तत्वों के अस्तित्व, जैविकता एवं जैविक अधिकार को अनदेखा करती है। इसलिए यह बताया जा सकता है कि आज धरती के सर्व चराचर कुविकास की इस आँधी से पीड़ित हैं। आजकल की पूँजीवादी विकास नीतियों से यह भी व्यंजित होती है कि मनुष्य धरती की एकमात्र प्रजाति बनकर संपूर्ण प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग करना चाहता है किंतु विभिन्न तत्वों की साकल्यता अर्थात् पारस्पर्यता में ही धरती में जीवन का संगीत बरसेगा, नहीं तो यहाँ पर मृत्यु का मातम बजेगा। इस प्रकार कविता के विस्तृत वाचन से यह सुस्पष्ट होता है कि वर्तमान की पूँजी केंद्रित विकास प्रक्रिया प्रकृति की जैविकता, नैसर्गिकता, स्वाभाविकता, सहजता, पारस्पर्यता, सृजनात्मकता को नकारकर पृथ्वी के स्वस्थ-सुंदर भविष्य को ललकार रही है। संक्षेपतः कहा जाए तो एकांत जी की प्रस्तुत कविता आज के विकृत विकास तंत्र और इससे विक्षत प्रकृति व मानवीयता के आर्तनाद को स्वर दे रही है। कविता के सूक्ष्म तथा गहन अध्ययन से यह भी विदित होता है कि मानवीयता और पूँजीवादी विकास के बीच की यह लड़ाई वास्तव में जीवन और मृत्यु के बीच की लड़ाई ही है।

****

संदर्भ:

1. एकांत श्रीवास्तव, धरती अधखिला फूल है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ. 199
2. एकांत श्रीवास्तव, धरती अधखिला फूल है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ. 122
3. अचला पाण्डेय, विस्थापन का साहित्यिक विमर्श, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2019, पृ. 11
4. नाव खेते हुए उस पार जाते हुए सहसा/ एक जगह ठिठककर रुकते हैं लोग
कि देखो ठीक इस जल के नीचे है गौरा-चौरा/ यहाँ माता देवाला/
यहाँ खेड़का डाहर, यहाँ धारण चौरा/ यहाँ नीम जिसमें रहती थी सतबहिनी
ये ढीमर पारा, ये सतनामी पारा/ यहाँ घर भागवत महाराज का
ये दुकान कांति बाई की/ ये बँधान इंधरमन का, ये घर बोटरी राउत का
और यह मुखरू धीवर की/ जो लहुट गया था साधु।
(एकांत श्रीवास्तव, धरती अधखिला फूल है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ. 123)
5. एकांत श्रीवास्तव, धरती अधखिला फूल है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ. 119-120
6. छूटती कहाँ थी धरती/ पर पुलिस ने चलाई थी गोली
छूटता कहाँ था जनपद/ पर पुलिस ने बरसाई थीं लाठियाँ।
(एकांत श्रीवास्तव, धरती अधखिला फूल है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ.124)
7. अभी तक तो नहीं थे बड़े बाँध/ फिर भी जी रहा था यह देश
पी रहा था पानी/ सींच रहा था अपने पौधों को
जो बन ही जाते थे एक दिन पेड़।"
(एकांत श्रीवास्तव, धरती अधखिला फूल है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ.126)
8. जल क्यों नहीं जाते इस आग में/ रुपये विश्व बैंक के
जिन्हें लेकर आए ऋण में तुम/ जिसके ब्याज से उऋण नहीं हो पाएँगी
कई-कई पीढ़ियाँ/ वैसी यह निति विकास की/ पाताल की ओर ले जाती हुई।"
(एकांत श्रीवास्तव, धरती अधखिला फूल है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ.126)
9. एकांत श्रीवास्तव, धरती अधखिला फूल है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ.125
10. एकांत श्रीवास्तव, धरती अधखिला फूल है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ.125

सामाजिक दुर्दशा का यथार्थ दस्तावेज : गिलिगडु

भाग-2

डॉ.सुनील
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
हिन्दी-विभाग गुरु नानक देव
विश्वविद्यालय, अमृतसर-
143005 (पंजाब)

डॉ.संतोष बबन पगार
हिंदी विभाग,गोखले एज्युकेशन सोसायटी
संचालित एच.पी.टी.आर्ट्स एंड
आर.वाय.के.सायंस कॉलेज,नाशिक

सारांश:-'मातृदेवो भव' भारतीय पारिवारिक व्यवस्था का मूलाधार है।भारतीय संस्कृति में वृद्धों का आदरएवं सम्मान करना परिवार का आदिकर्तव्य माना जाता है ; परंतु वैश्वीकरण की अंधी दौड़, टूटते पारिवारिक मूल्य, भूमंडलीकरण, पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण, भौतिकवादी दृष्टिकोण,अपनत्व का अभाव और अतिआधुनिकताके प्रभावस्वरूप भारतीय समाज में मानवीय मूल्य गौण होते जा रहे हैं।2009 में प्रकाशित चित्रा मुद्गल द्वारा लिखित 'गिलिगडु' उपन्यास हिंदी साहित्य जगत में एक महत्वपूर्ण रचना है, जिसमें वृद्धावस्था की भयानकता के साथ वृद्धों की पारिवारिक तथा सामाजिक समस्याओं की मार्मिकता के साथ अभिव्यक्ति की है। उपन्यासकार ने उपन्यास में ऐसे दो वृद्धों के जीवन को केन्द्र में रखा है, जिन्हें अपने ही परिवार के सदस्यों ने किसी फ़ालतू, बेकार वस्तू की तरह अपने जीवन से अलग कर दिया।चित्रा मुद्गल ने बाबू जसवंत सिंह और कर्नल स्वामी के माध्यम से देश के उन तमाम वृद्धों की समस्या को उठाया है, जो जीवनभर अपने परिवार के लिए अपना सर्वस्व त्याग देते हैं। 'गिलिगडु' उपन्यास भारतीय समाज के शिष्ट समझे जाने वाले तथाकथित मध्यवर्गीय समाज की पोल-खोल करता है और वृद्धों की दयनीय दशा के कारणों की खोजबीन की है।यह उपन्यास प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक जीवन-मूल्यों के महत्त्व को भी अधोरेखित करता है।

प्रस्तावना:-भारत की संस्कृति सामाजिक रही है। भारतीय संस्कृति का मूलाधार 'मातृदेवो भाव–पितृ देवो भव' जैसे मूल्य रहे हैं। इसमें पारिवारिक सम्बन्धों का विशेष महत्व रहा है।इसी कारण धर्म एवं अध्यात्मपरक भारतीय संस्कृति मानव जीवन कोसंस्कारित भी करती है। परिवार संस्कृति में अनेक संस्कारों का सहज निर्वाह लक्षित होता है। भारतीय संस्कृति में सत्य, त्याग, प्रेम, सदाचार, मानवता आदि अनेक मानवीय विधायक मूल्यों का प्रत्येक भारतीय अपने व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन में पूरी आत्मीयता से निर्वहन करता आया है। परंतु वर्तमान में आधुनिक भौतिक उपयोगितावादी समाज में सभी पारिवारिक- सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य गौण होते जा रहे हैं। अतः ऐसे में पारिवारिक एवं सामजिक संबंधों के लिए कोई स्थान शेष नहीं है। आज भी यह मूल्य मानवीय संबंधों के लिए लाभदायक हैं, लेकिन आधुनिक सभ्य कहे जाने वाले भौतिकवादी मानव द्वारा इन परंपरागत मूल्यों को नकारा जा रहा है।चित्रा मुद्गल द्वारा लिखित 'गिलिगडु'(2009)उपन्यास हिंदी साहित्य जगत में एक महत्वपूर्ण रचना है, जिसमें वृद्धावस्था की भयानकता के साथ वृद्धों की अन्य समस्याओं की मार्मिक अभिव्यक्ति की है। उपन्यासकार ने उपन्यास में ऐसे दो वृद्धों के जीवन को केन्द्र में रखा है, जिन्हें अपने परिवार के सदस्यों ने किसी फ़ालतू, बेकार वस्तु की तरह अपने जीवन से अलग कर दियावे शारीरिक अक्षमता के चलते अपनी अपमानित स्थिति का विरोध भी नहीं कर पाते और ऐसा अपमानित एवं अभिशप्त जीवन जीने को विवश हैं। भारतीय संस्कृति में बुजुर्गों का आदर, सम्मान कर उन्हें सुखी रखना परिवार का कर्तव्य है,परंतुअतिआधुनिकता के प्रभावस्वरूप आज अनेकभारतीय परिवारों में इन संस्कारों का सर्वथा अभाव लक्षित होता है। वैश्वीकरण की अंधीदौड़, टूटते पारिवारिक मूल्य, भूमंडलीकरण, पाश्चात्यसंस्कृति का अंधानुकरण, भौतिकवादी दृष्टिकोण और अपनत्व के अभाव से मानवीय संबंधों में दरार दृष्टिगोचर होती है।

परिवार में भी व्यावहारिकता के आगमन के कारण सदस्यों में आपसी मनमुटाव दिखाई देता है। वर्तमान वृद्ध विमर्श विचार करने पर ज्ञात होता है की वृद्धों की दुर्दशा का बड़ा कारण उनके अपने परिजन ही होते हैं। अपनों से मिलनेवाली उपेक्षा एवं दुख उन्हें भीतर से गहरे तक तोड़ता है| शारीरीक दुर्बलता के साथ उपेक्षा, एकाकीपन बुजुर्गों को हाशिये पर धकेल देता हैं। आधुनिक अर्थकेंद्री जीवनशैली ने मानव को स्वार्थी बनाया है| पैसा ही सर्वस्व माननेवाली नई पीढ़ी को किसी पारिवारिक भावनिक रिश्ते की जरूरत अनुभव नहीं होती। भूमंडलीकरण के फलस्वरूप मानवीय मूल्य खंडित हो रहे हैं। आज की युवा पीढ़ी की आधुनिक जीवनशैली में अगर माता-पिता के कारण भी कोई बाधा उत्पन्न होती है तो उन्हें भी वे बड़ी बेदर्दी के साथ घर से बाहर निकाल रहे हैं। 'गिलिगड्' ऐसे दो वृद्धों की करूण कहानी है, जिन्हें अपनों ने ही अपने जीवन से बाहर निकाल दिया है|वास्तव में यह दो वृद्धों की दर्दशाही नहीं है, बल्कि व्यापक स्तर पर यह वैश्विक दुर्दशा की ओर संकेत है। संचार माध्यम क्रांति के इस विशेष दौर में पश्चिमी सभ्यता को अपनाने वाली आज की भारतीय युवा पीढ़ी परिवार के वृद्धजनों को बोझ मानकर अपनेउत्तरदायित्व से मुकर जाती है|

1.युवा पीढ़ी की असंवेदनशीलता:-किसी समाज की युवा पीढ़ी अपने समाज के सर्वांगीण विकास के लिए उत्तरदायी होती है; किंतु वर्तमान में लक्षित होता की अर्थकेंद्री व्यवस्था के प्रभाव स्वरूप वे अपने पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्व से दूर भागना चाहते हैं| युवा पीढ़ी अपने बुजुर्गों को सम्मान न देकर उन्हें अकेला जीने के लिए छोड़ देती है। 'गिलिगड्' उपन्यास में भारतीय युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व जशवंत सिंह का बेटा नरेंद्र करता है। इस पीढ़ी को वृद्धों की संपत्ति तो चाहिए होती है;किंतु बुजुर्गों की सेवा के लिए उनके पास समय नहीं है। जसवंत सिंह को कानपुर से बेटे और बहू के द्वारा दिल्ली बुला दिया जाता है। लेकिन वहाँ पर वे कदम-कदम पर स्वयं को अपमानित महसूस करते हैं। बात-बात पर उन्हें टोका जाता है। रहने के लिए भी बालकनी को रूम में तब्दील किया जाता है, जो कही न कहीं वृद्धों को हाशिये की ओर धकेलने का प्रतीक है।अपने बेटे और बहू की अपने प्रति उपेक्षा को देखकर ही जसवंत सिंह विवश होकर नरेंद्र से पूछते हैं, "तुम कभी बूढ़े नहीं होगे नरेंद्र?"[1] बेटा नरेंद्र और बेटी शालिनी उन्हें वृद्धाश्रम 'आनंद निकेतन' में भेजने की योजना भी बनाते हैं। अपने बेटे के घर में ही अपनी दुर्दशा को देखकर वे सोचते भी हैं कि "इस घर में एक नहीं दो कुत्ते हैं एक टॉमी, दूसरा अवकाश प्राप्त सिविल इंजीनियर जसवंत सिंह! टॉमी की स्थिति निसंदेह उनकी बनिसबत मजबूत है।"[2]युवा पीढ़ी को चाहिए कि वे अपने घर के बुजुर्गों के बारे में मानवीय दृष्टिकोण के साथ चिंतन करें|

उपन्यास के दूसरे बुजुर्ग कर्नल स्वामी की स्थिति तो अधिक भयावह है, जिसे चित्रा मुद्गलजी ने बड़ी कुशलता के साथ उपन्यास के अंत में प्रकट किया है।कर्नल स्वामी एक ऐसा व्यक्तित्व है, जिसे तीन बेटे होने के बावजूदअपने ही परिवार द्वारा अकेले रहने के लिए विवश कर दिया है। लेकिन कर्नल स्वामी अकेलेपन में भीप्रसन्न रहने की कोशिश करते हैं। जसवंत सिंह से मिलने के बाद उनके समक्ष स्वयं को बहुत सुखी और आनंदित प्रस्तुत करते हैं। उनके बेटे-बहू अलग रहते हैं| कर्नल स्वामी कई दिनों तक प्रातःकालीन भ्रमण पर न आने के बाद उनकी पूछताछ करने हेतु जसवंत सिंह उनके घर पहुँचते हैं, तब जसवंत सिंह का जिस कड़वी सच्चाई का सामना होता हैं, जिससे उनके पैरो तले की जमीन खिसक जाती है। कर्नल स्वामी की पड़ोसी मिसेज श्रीवास्तव जशवंत सिंह को कर्नल की दुर्दशा से अवगत कराती है और कहती है- "ऐसी कसाई औलादों से आदमी निपूता भला। हमें इस बात का कोई गम नहीं कि हमारी कोई अपनी औलाद नहीं....|"[3]वस्तुतः लेखिका ने इस उपन्यास में पारिवारिक मूल्यों के टूटने से उपजी भयावहता का बेबाक चित्रण किया है,जहाँ न आपसी प्रेम है और न ही लगाव है।

2.पारिवारिक विघटन:-परिवार भारतीय समाजव्यवस्था की मूलभूत इकाई होती है| व्यक्ति-विकास की बुनियाद ही परिवार है| अतः किसी विकासशील समाज व्यवस्था में परिवार व्यवस्था का मजबूत होना महत्वपूर्ण होता है| 'गिलिगड्' उपन्यास में बाबू जसवंत सिंह और कर्नल स्वामी के परिवार के सदस्यों में आपसी मनमुटाव एवं बिखराव दिखाई देता है, जहाँ स्वार्थ के समक्ष आपसी सौहार्द, स्नेहभाव तथा सद्भाव खो गए हैं|आधुनिकता ने पारिवारिक साहचर्य भावना पर ही हमला बोल दिया है| बाबू जसवंत सिंह अपने बेटे और बेटी से उपेक्षित पिता है| वे अतीत की सुखद स्मृतियों को स्मरण करते हैं-"जन्मदिन जो और दिनों से अलग नरेंद्र से एक टेलीफोन की दरकार रखता था और चरणस्पर्श बाबूजी सुनकर गदगद हो आशीषों की बौछार से उसे भिगो देता था| तड़के टेलीफोन की पहली घंटी बजती थी उसकी, सबको पछाड़ते हुए|सुनते ही शालू तुनककर कहती इतनी सुबह उसने बधाई के लिए फ़ोन इसीलिए किया कि वह जन्मदिन की बधाई देने में भैया को पछाड़ना चाह रही थी|"[4] परंतु वृद्धावस्था में दोनों बच्चे पिता को वृद्धाश्रम भेजने पर सहमत है| इस दुर्व्यवहार से व्यथित होकर ही बाबू जसवंत सिंह अपनी जायदाद अपने बच्चों के नहीं, बल्कि कानपुर के घर में सेवा करने वाली सुनगुनिया और उसकी बेटियों के नाम पर करने का बड़ा निर्णय करते हैं|

3. अतिआधुनिकता का दुष्प्रभाव :-संचार क्रांति के आगमन से मनुष्य जीवन सुकर और भौतिक दृष्टी से समृद्ध तो बना, लेकिन उसके अनेक दुष्परिणाम भी सामने आए हैं| अतियांत्रिकता ने मानव को भी यंत्रवत बना दिया है| यही कारण है की जो समय कभी विचार विमर्श, साहचर्य, स्नेहत आदान-प्रदान के लिए होता था, अब वह समय एकाकीपन में बिताना नियति-सी बन गई है| बचपन किसी व्यक्ति के लिए सुनहरी यादों का दर्पण होता है, लेकिन जब बचपन की मौजमस्ती की जगह मोबाइल या कंप्यूटर हाथ आ जाए तो इन आधुनिक मशीनों ने बच्चों का बचपन तो छीन ही लिया है|साथ ही अकेले रहने की आदत ने उनकी सामूहिक सोच को सिकोड़ दिया है| आज के बच्चे एवं युवा वर्ग मैदानी खेल की अपेक्षा अनेक प्रकार के विडिओ गेम, मोबाइल में ही व्यस्त रहता है| कामकाजी माता-पिता भी बच्चों से जान छुड़ाने के लिए उन्हें कई यांत्रिक खिलौने ला देते हैं| इससे नई पीढ़ी आत्मकेंद्री बनती जा रही है| बाबू जसवंत सिंह के पोते मलय और निलय भी इसी तरह यंत्रवत जीवन जी रहे हैं और वे अपने समक्ष यंत्रों के प्रभाव में आने वाली अपनी नई पीढ़ी को बर्बाद होते देख रहे हैं| चित्रा मुद्गल बाबू जसवंत सिंह के पोतों की खिलौनों के प्रति आसक्ति को लेकर लिखती है -" गली के बच्चों के साथ खेलने में उनकी कोई दिलचस्पी न होती| न अपने खेलों में उन उत्सुक बच्चों को साक्षीदार बनाते| न हाथ लगाने देते| उन्हें खेल-खिलौने में भी षड्यंत्र की बू आती| बुद्धि विकास की आड़ में खूबसूरती से बच्चों को संवेदनाहीन किया जा रहा है, इतना कि बच्चे कभी परिवार में न लौट सकें, न कभी अपना परिवार गढ़ सकें|"[5] बाबू जसवंत सिंह पोतों की नीरसता दूर करने हेतु परिवार एवं मित्रों के बीच मलय का जन्मदिन मनाना चाहते हैं| लेकिन मलय पापा से कहकर मैकडोनाल्ड की मेज बुक कराकर दादा की योजना पर पानी फेर देता है| बाबू जसवंत सिंह का बेटा नरेंद्र और बहू सुनयना को भी बच्चों की क्षीण होती जा रही क्षमता की कोई चिंता नहीं है| अंतः घर में बुजुर्गों के स्नेह के अभाव में नई पीढ़ी यांत्रिकता के भयानक पाश में फंसती लक्षित होती है|

4. दांपत्य जीवन में बिखराव:-सफल दांपत्य जीवन ही किसी सुखी परिवार की आधारशीला है| भारतीय समाज में विवाह को पवित्र बंधन माना जाता है| पति-पत्नी में पारस्परिक प्रेम के साथ विश्वास और समर्पण का विशेष महत्त्व होता है| बाबू जसवंत सिंह का दांपत्य जीवन सुखद रहा | उनकी पत्नी साथ कतिपय कटु अनुभवों के साथ बेहद आत्मीय भाव

रहा है| परंतु वर्तमान में आपसी द्वेष, इर्ष्या, निजी महत्वाकांक्षा से दांपत्य संबंधों में तेजी से बिखराव देखा जा रहा है| कर्नल स्वामी की बहू अनुश्री निजी महत्वाकांक्षा के सामने पति श्रीनारायण और परिवार को कोई महत्त्व नहीं देती और उसका परिवार बिखर जाता है| " डेढ़ साल की मासूम जुड़वाँ बेटियों को छोड़ उसने अपने नृत्य गुरु के साथ डंके की चोट पर रहना शुरू कर दिया था| बच्चियों को जतन से उनकी दादी ने पाला-पोसा| ...उसी बीच कर्नल स्वामी की अनिच्छा के बावजूद श्रीनारायण ने दसरा ब्याह कर लिया और बच्चियों को हैदराबाद में ही हॉस्टेल में डाल दिया|"[6] वास्तव में पति-पत्नी के बीच मनमुटाव से उसकी कुमुदिनी और कात्यायनी जैसी बेटियों का भविष्य अंधकारमय हो जाता है| अतः पति-पत्नी के विवाद आम बात हैं, लेकिन उसे टालकर उस रिश्ते को बनाए रखने का हरसंभव प्रयास दोनों ओर से होना आवश्यक है|कहना न होगा कि दांपत्य जीवन की बुनियाद आपसी इर्ष्या न होकर स्नेहभाव और परस्पर विश्वास होता है|

5.मानवतावादी दृष्टि:-मानव स्वयं अनेक मानवीय संबंध बनाता है| उनकी नीव परस्पर प्रेम तथा साहचर्य होती है| वर्तमान पूंजीवादी समय में हर संबंध में व्यावहारिक दृष्टि लक्षित होती है| खून के रिश्ते भी स्वार्थ की दलदल में भटके दिखाई देते है| ऐसे में खून के रिश्ते की अपेक्षा मानवीय रिश्ते महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं| कर्नल स्वामी और जसवंत सिंह का रिश्ता ऐसा ही मानवीय है, जिसके मूल में निरपेक्ष स्नेह है| वे एक ऐसे रिश्ते से बंधे हैं, जिससे एक-दूसरे के हमदर्द बन जाते हैं| जसवंत सिंह तो कर्नल स्वामी के साथ रहकर अपने सभी दुख-दर्द भूल जाते हैं| स्वामी सदैव जसवंत सिंह को खुश रहने के लिए प्रोत्साहन देते हैं| कर्नल स्वामी अपने बेटे और बहुओं से मिले अमानवीय व्यवहार से आहत हैं| किन्तु वे इस दशा में भी वे गरीब नए लोगों के बीच नवीन किन्तु मानवीय रिश्ता बनाकर अपनी नई निस्वार्थ दुनिया खड़ी करते हैं| गरीब बच्चों को पढ़ते हैं| कर्नल स्वामी अपने घर में अकेले ही रह रहे थे किन्तु अब उनकी मृत्यु हो चुकी थी। वे बाबू जसवंत सिंह को जिस बहू बेटों और पोतियों की बात बताते थे, वह सब काल्पनिक था। जसवंत सिंह उपहार के रूप में जो कुछ ले गए थे वह पड़ोसी को देकर लौट आते हैं। चित्रा मुद्गल इस दरावस्थ कहानी को बड़ी संजीदगी के साथ पेश करती है। रचना इस विश्वास को और भी गहरा करती है कि साहित्यिक मूल्यों में सामाजिक सार्थकता का महत्व निरंतर बना रहेगा।

6.सामाजिक मूल्य क्षरण:-'गिलिगडु' उपन्यास में चित्रा मुद्गल ने सामाजिक मूल्यों के क्षरण की प्रक्रिया को बड़ी कुशलता के साथ चित्रित कियाहै। तेरह दिनों की मित्रता में जसवंत सिंह और कर्नल स्वामी की जो स्थिति प्रकट होती है, वह वस्तुतः मूल्यों के क्षरण का ही परिणाम है। संयुक्त परिवार भारतीय संस्कृति की विशेष पहचान रहा है, जहाँ सम्बन्धों को महत्व दिया जाता था। किन्तु आज न तो संबंध की जरूरत रही, न ही मूल्यों की। इस उपन्यास में चित्रा जी ने यह भी दिखाने की कोशिश की है कि जड़ों से कटने पर व्यक्ति का जड़ों के प्रति कितना लगाव होता है। जसवंत सिंह कानपुर से सबकुछ छोड़कर बेटे नरेंद्र के पास दिल्ली आते है; किन्तु अपनापन कहीं न कहीं कानपुर में ही छूट जाता है। बेटे और बहू के साथ वे अपनेपन को महसूस नहीं कर पाते। कदम-कदम पर वे स्वयं को अपमानित-सा महसूस करते है। बेटा नरेंद्र और बेटी शालिनी दोनों ही जसवंत सिंह की जमीन, जायदाद, बैंक बैलेन्स को लेकर लालायित है।जसवंत सिंह की बेटी उनसे कहती है,"लॉकर में अभी है तो बहुत कुछ बाबूजी! अम्मा के अपने कई सेट ,पाच तोले के आजीवाली नाथ, चांदी का ढेरों सामान। अम्मा हमेशा कहती रही- अपनी पचलड़ और कुन्दन का सेट वे अन्वीता को देंगी और विक्रम की बहू के लिए....'।"[7] अपनी बेटी से यह बाते सुनकर गहरा आघात पहुँचता है और उनके हाथों से फोन का रिसीवर छूट जाता है।बाबू जसवंत सिंह अपने एकांत को दूर करने कानपुर से दिल्ली आए थे, ताकि वे अपने बेटे, बहू और पोतों के साथ खुश रह सके। लेकिन उनका एकांत दूर नहीं होता। जसवंत सिंह की बहू ने भी अपने बच्चों को आत्मकेंद्रित बना दिया है, यथा - "बुद्धि विकास की आड़ में बड़ी खूबसूरती से बच्चों को संवेदनाच्युत किया जा रहा, इतना कि बच्चे कभी परिवार में न लौट सके, न कभी अपना कोई परिवार गढ़ सकें।"[8]जसवंत सिंह जब कर्नल स्वामी कि स्थिति से रूबरू होते हैं, तब परिवार के प्रति उनका रहा सहा मोह भी भंग हो जाता है। यही कारण है कि उनका प्रेम बेटा, बहू और बेटी की अपेक्षा कानपुर के घर में रहने वाली नौकरानी सुनगुनियाँ और उसके बच्चों के प्रति अधिक उमड़ता है। इतना ही नहीं अपने शव को मुखाग्नि देने की ज़िम्मेदारी भी उसे ही सौंपते हैं।

निष्कर्षत:- आज मनुष्यता धीरे-धीरे कम होती जा रही है। उपभोक्तावाद, भूमंडलीकरण के चलते मनुष्य सिर्फ अपनी तरक्की, सुख-सुविधा से भरा जीवन व्यतीत करना चाहता है; लेकिन इस भौतिक प्रतिस्पर्धा में वह अपनों को ही भूल जाता है। देश में वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या कुकुरमुत्ते की भाँति चिंतनीय हैं|युवा पीढ़ी के लिए अपने ही माता-पिता की देखभाल लिए बोझ न होना चाहिए| चित्रा मुद्गल ने इसे अपने उपन्यास'गिलिगड़' में बखूबी दर्शाया है और युवा पीढ़ी को वर्तमान स्थिति से साक्षात्कार कराया है।अतिआधुनिकता एवं व्यावहारिक दृष्टि के प्रभावस्वरूप आज अनेक भारतीय परिवारों में पारिवारिक विघटन लक्षित होता है। आधुनिक अर्थकेंद्री जीवनशैली के कारण वर्तमान मानव को स्वार्थी बनाया है| वर्तमान में आधुनिक भौतिक उपयोगितावादी समाज में मानवीय मूल्य गौण होते जा रहे हैं। अतः इस पर 'मातृदेवो भव' और 'पितृदेवो भव' का संस्कार ही संपूर्ण उपाय है|

****

संदर्भ सूची:-

1) गिलिगडु - चित्रा मुद्गल,सामयिक प्रकाशन, 2007,पृष्ठ संख्या - 80
2)वहीं, पृष्ठ संख्या - 96
3) वहीं, पृष्ठ संख्या - 138
4) वहीं, पृष्ठ संख्या - 46
5) वहीं, पृष्ठ संख्या - 34
6) वहीं, पृष्ठ संख्या – 37
7) वहीं, पृष्ठ संख्या – 56
8) वहीं, पृष्ठ संख्या – 39